



The Mist, The River, The Pebbles... And The Wild

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

Typical brief alarm calls, emitted by chital and barking deer, had started echoing, piercing through the silence of the quiet twilight hours.

Reduced Risk of Type-2 Diabetes

Budget-friendly destinations in India for your November getaway

कांग्रेस हाईकमान ने राजस्थान को “उसके हाल” पर ही छोड़ा

राजस्थान में हाल ही में होने वाले सात ‘बाई इलैक्शन’ में न कोई वरिष्ठ नेता मौजूद है, नेतृत्व प्रदान करने के लिए और न ही धन उपलब्ध है, चुनाव अभियान चलाने के लिए

- रेणु मितल -

- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्लूरो -
नई दिल्ली, 8 नवम्बर। सातवाहन कांग्रेस नेतृत्व ने राजस्थान राज्य इकाई को लगाया दिया रहा है, जहाँ सात उपचुनाव होने वाले हैं।

पार्टी में ना तो वरिष्ठ नेता है ना फण्ड और चुनावों की जिम्मेवारी डोटासरा पर छोड़ दी गई है, जिनके लिए यह कार्य अति दुष्कर है।

पार्टी अधियान जोर नहीं पकड़ पाया है, क्योंकि, उपचुनावों पर किसी तरह का फोकस नहीं हो सकिया जाए तो उपचुनाव को लिए यह कार्य अति दुष्कर है।

दूसरी ओर अधियान जोर नहीं पकड़ पाया है, उपचुनावों को लिए यह कार्य अति दुष्कर है।

जब से चुनाव शुरू हुए हैं, तब से राजस्थान के प्रभारी ए.आई.सी.सी. महासचिव रंथवा को एक बार भी अपना

- पायलट को एक ही दिन दिया गया, राजस्थान में चुनाव प्रचार के लिए, बाकी समय पायलट को वायनाड, झारखण्ड, महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ में घुमाये रखा गया, चुनाव प्रचार में उलझाये रखा गया।
- गहलोत को पर्यवेक्षक के रूप में मुमर्झ भेजा गया, और वे वहाँ खुश हैं, तथा चुनाव प्रचार के लिए राजस्थान आने को ज्यादा इच्छुक नहीं हैं।
- राजस्थान हिंचार्ज, रंथवा ने राजस्थान में अभी तक अपना मुंह नहीं दिखाया है, जब से राजस्थान में उपचुनाव का काम शुरू हुआ है। रंथवा का दावा है, वे प्रभारी पद से त्यागपत्र दे चुके हैं, पर अभी उन्हें ही काम सभालने की जिम्मेवारी सौंपी गई है, जब तक नया प्रभारी नियुक्त नहीं होता है।
- प्रदेशाध्यक्ष डोटासरा जलर पार्टी का झण्डा लेकर खड़े हैं, पर, न उनका राजनीतिक कद हत्ता ऊँचा है, न ही पकड़ की उपचुनाव में पार्टी को नेतृत्व प्रदान कर सकें। उदाहरण के लिए झुझनु में कांग्रेस के पुराने विपक्ष, बगावत के मूड में हैं, टिकट न मिलने की जगह से, पर अभी तक मुसलमानों का जोश ठड़ा करने के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं हुए हैं, क्योंकि इस “स्टेट्स” (रूलडे) का नेता उपलब्ध नहीं, जो यह जिम्मेदारी उठा सके।

चेहरा तक नहीं दिखाया है। उनका कहना है कि उन्होंने इसीलाई दिया है लेकिन, उनका इसीसी स्वीकार नहीं किया गया है और जब तक कोई परिवर्तन नहीं किया जाता है, तब तक, अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी डूटी करें। पिछली बार जब वो यहाँ आये थे, उस समय वे गहलोत की कृशल मंगल पूछने के लिये आये थे, जो उस समय बीमार थे। इसके अलावा, रस्ता ने खबर की यहाँ की चुनाव प्रक्रिया में सामिल करना ठीक नहीं समझा है। झुझनु उपचुनाव की रिस्ट्रिक्शन बड़ी रोकवान है। वहाँ से ओला चुनाव लड़ रहे हैं। वहाँ से ओला चुनाव लड़ रहे हैं। वहाँ सुलिमानों में नारजी है क्योंकि उनका मानना है कि इस सीट पर आला चुनाव नहीं किया जाएगा कि आगली पीढ़ी को चुनाव में उतारने के लिए बड़ा चुनाव नहीं किया जाएगा। उन्होंने के बजाय, इस उपचुनाव में किसी सुसिलिम को टिकट दिया जाना चाहिए था।

मुसलिमों ने चुनाव का बहिकार करने की धमकी दे दी है, लेकिन इसके बावजूद, इस मामले को निपटने के लिये वहाँ किसी भी विषय नहीं किया जाता है। जिसने उपचुनाव के लिए कोई विषय नहीं किया जाएगा। उन्होंने के बजाय, इस उपचुनाव में किसी सुसिलिम को टिकट दिया जाना चाहिए था।

का उद्देश्य सरकारी कर्मचारियों के स्वास्थ्य तथा दफ्तरों के पर्यावरण का ब्यालू रखना है।

इस दफ्तरों में स्पष्ट चेतावनी दी गई है कि आग नियमों के उल्लंघन होता है तो अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायेगी। सरकारी दफ्तरों में “नो स्पोर्टिंग” तथा “नो टोबैको” बोर्ड भी उल्लंघन करने के लिए जायें। जिससे कि कर्मचारियों (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सरकारी दफ्तरों में नहीं होगा तम्बाकू का इस्तेमाल

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्लूरो -
नई दिल्ली, 8 नवम्बर। सरकार ने सिगरेट, गुटखा या किसी भी प्रकार के तम्बाकू उत्पाद का उत्तरोपयोग एवं तम्बाकू के उपचुनाव में सिगरेट पैने एवं तम्बाकू के उपचुनाव में उपयोग पैर पूरे तरह रोक लगाया है।

सरकार के आदेश के अनुसार, सिगरेट, गुटखा या किसी भी प्रकार के तम्बाकू उत्पाद का उत्तरोपयोग एवं तम्बाकू के उपचुनाव में सिगरेट पैने एवं तम्बाकू के उपचुनाव में उपयोग पैर पूरे तरह रोक लगाया गया है।

सरकार ने सरकारी कार्यालयों में धूप्रापन तथा गुटखा, जर्दा के सेवन पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है, चेतावनी दी दी है कि आदेश का उल्लंघन हुआ तो अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

ट्रूप का ट्रैक रिकॉर्ड कहता है कि भारत को उनके प्रति सतर्कता बरतनी होगी

ट्रूप दोस्त हैं, इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए भारत को

ट्रूप का ट्रैक रिकॉर्ड कहता है कि भारत को उनके प्रति सतर्कता बरतनी होगी

-अंजन रॉय-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्लूरो-

नई दिल्ली, 7 नवम्बर। इसे पहले कमी भी सीमी अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव ने दुनिया भर में इसी व्यापक रूप से विश्व वित्तीय और राजनीतिक देशों, जिनमें भारत भी है, के साथ करते हैं।

ट्रूप ने चुनावों में महांगाई कम करने, वेतन बढ़ाने, उपभोक्ता डिमांड में बृद्धि जैसे कई वार्दे किए हैं, इन सभी वार्दों को पूरा करने में अमेरिकन अर्थव्यवस्था की दशा बिगड़ सकती है।

इसमें कोई संदेह नहीं है, कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था से विश्व के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है, देखना यह है कि ट्रूप की इकोनॉमिक अमेरिका व अन्य देशों को किस तरह से प्रभावित कर सकती है।

आने वाले माल पर भी लगाये जाएंगे, माँग बनी चाहिए क्योंकि उपभोक्ता की आमदारी बढ़ेगी। शुल्क बढ़ जाने से विश्वों से आने वाला सामान सीमित तथा महांगा हो जायेगा तथा इससे सभी चीजों की कीमतें बढ़ेगी। ऐसे विश्व के अनेक देशों की अर्थव्यवस्था ये तरह इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

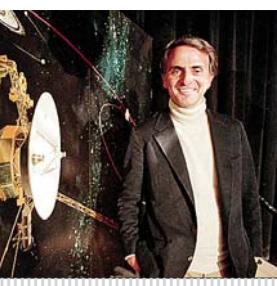
इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अर्थव्यवस्था के अनेक देशों के लिए इकोनॉमिक अर्थव्यवस्था से प्रभावित होती है, जिनमें भारत भी है।

इस प्रकार के शुल्क अ



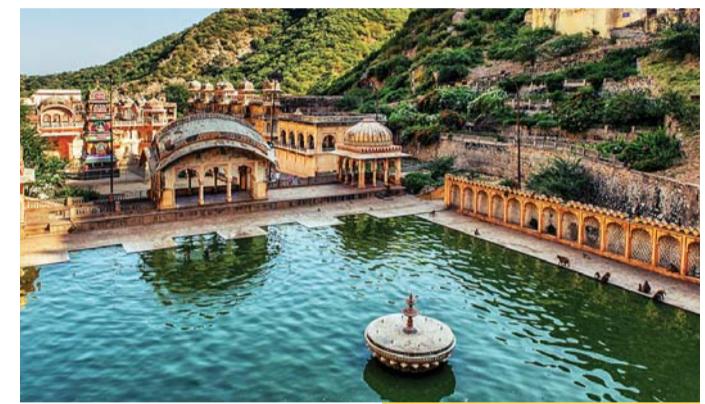
A

Always having a keen mind for astronomy and science, Carl Sagan spent his life pursuing education and research in the world of space and planetary discoveries. Though, he encouraged skeptical and critical thinking, Sagan was a personality, who often considered thinking creatively, particularly, when it came to the possibility of life on other planets. Some of his most important contributions include the discovery of the high temperatures on the surface of the planet Venus, as well as understanding of the seasonal changes on the planet Mars, and the comprehension of the atmospheres of both Jupiter and Venus.

#TRAVEL

Budget-friendly destinations in India for your November getaway

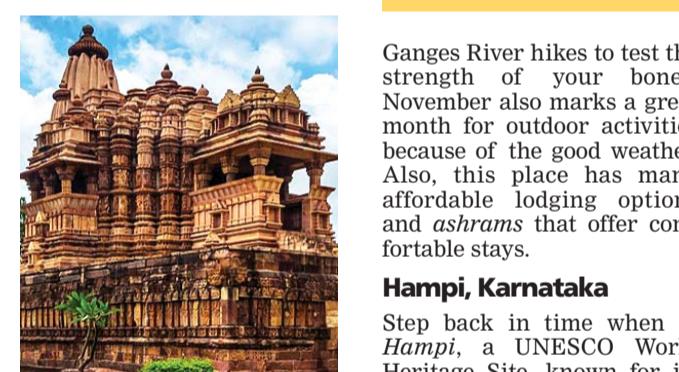
If you are also planning such a vacation, but without stretching your wallet, we are here to help you find the perfect places.



Jaipur, Rajasthan

As the crispy air fills the air of November, it's also the ideal time to plan a trip to end the year on a great note. If you are also planning such a vacation, but without stretching your wallet, we are here to help you find the perfect places. Here, we have listed some of the pretty destinations that promise rich experiences at budget-friendly prices.

Khajuraho, Madhya Pradesh



Ganges River hikes to test the strength of your bones. November also marks a great month for outdoor activities because of the good weather. Also, this place has many affordable lodging options and ashrams that offer comfortable stays.

Hampi, Karnataka

Step back in time when at Hampi, a UNESCO World Heritage Site, known for its breathtaking ruins and historic temples. Explore the fascinating terrain, which includes the magnificent Virupaksha Temple and is dotted with boulders and antique buildings. November is ideal for touring because of its milder weather. You can experience this historical treasure without going over budget. Thanks to reasonably priced hostels and homestays!

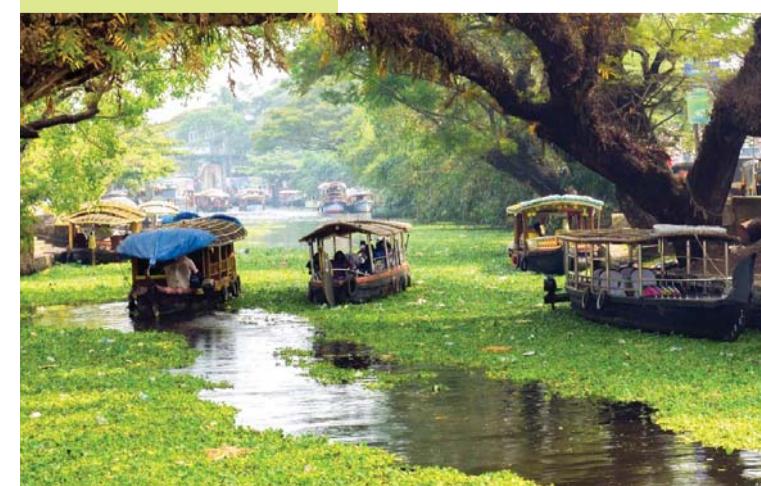
Puducherry

Discover Puducherry's captivating fusion of French and Indian traditions. It's a joy to be in this place dotted with peaceful beaches, lively bazaars, and lovely streets. The weather in November is ideal for cruising through the lush landscapes and enjoying the tranquil environment. Budget-friendly houseboat rentals and homestays make it easy to experience the beauty of Kerala without breaking the bank. Be sure to savor local delicacies at affordable eateries as you take in the stunning views.

Known as the 'Venice of the East,' Alleppey is famous for its serene backwaters and houseboat experiences. In November, the weather is ideal for cruising through the lush landscapes and enjoying the tranquil environment. Budget-friendly houseboat rentals and homestays make it easy to experience the beauty of Kerala without breaking the bank.

Darjeeling, West Bengal

Darjeeling, with its stunning tea gardens and breathtaking views of the Himalayas, offers a perfect escape. In November, the weather is crisp and clear, ideal for a famous toy train ride and visiting Tiger Hill for a stunning sunrise. Numerous budget hotels and homestays provide comfortable stays without breaking the bank.



Once I spotted a tiger-like-striper, but later on, it was found to be a hyena. From distance in dim light, one may get confused between tiger and hyena, as both the animals have off-white to golden coat and black stripes all over, except the fact that unlike tiger, hyena's dog-like-face is black in colour and devoid of stripes. Though, it was not far from us but the growing darkness caused this confusion. It is because of this similarity of stripes that often, hyena is mistaken to be a tiger by frightened villagers. It gets killed, even though, it is almost harmless, rather, a friend of humans as it keeps the area clean by eating out carcasses of dead animals.



Sunayan Sharma

IFS (Retd.)

Ex-field Director, Project

Tiger, Sariska &

National Park, Bharatpur

We were trying to scan the jungle but could not notice anything interesting. Then, a mahout with few tourists came close to us. He knew Pushp Jain, my friend. He pointed towards a *haldu* tree, under which a middle-size leopard was sitting quietly. It was almost camouflaged in the brown-black dry grasses and shade of the tree. Leopards are crepuscular. They are twilight hunters. It is part of their adaptation strategy for survival in tiger lands. Perhaps, this leopard was waiting for the sun to go down to hunt without attracting attention of any tigers in the area. With a few minutes, the sun was fading. The gypsy driver wanted to reach the Dhikala camp before sunset. He said that authorities are very strict, and as a rule, no vehicle or visitor/tourist should stay in the reserve, except at the permitted camps, after sunset. People not observing the rules were liable to punishment like debarring further entry in the reserve. The drivers were the worst affected for loss of their business as they were black-listed, along with their vehicles.

We too did not want to annoy the authorities so, leaving the leopard-at-rest, we rushed back to Dhikala.

With the sun now set at the Dhikala camp, the entire area had become even quieter than the day hours. An hour later, Ramganga, flowing in front of the rest house, got engulfed in darkness but at places its surface was still glittering. Sitting in the verandah, we were enjoying the quietness. Occasionally, some deer's barking could be heard in the distant valley. Rightly, Mr. Jim Corbett had called Dhikala as *heaven on earth*.

Muddhas, made of sticks of *Sacra munja* grass tufts, was highly rewarding. From our seats placed in the balcony of the legendary forest rest house of Dhikala, the Ramganga river, spread over a width of more than a kilometer, was displaying her charms. In the late hours of the evening, the entire place seemed to be wrapped in a blanket of mist and darkness. Thought it was an ideal time for leopard-like-crepuscular to embark on their hunting expedition but the magnetic attraction of the river kept drawing all the wild creatures, big or small, towards the water stream, irrespective of the fear of the carnivores. Typical brief alarm calls emitted by chinkara, barking deer and started echoing across through the silence of the quiet twilight hours. On every such call, using our binoculars, we were scanning the length and breadth of the river, in the hope of sighting

Certainly, such a fulfillment of spirit can be offered by rare places like this only. We were lucky to stay here and enjoy the heaven by birth of nature. There could be no other way better than this to welcome in the new year. We had two more days with us here, which we enjoyed to our heart's content in these whispering woods of Corbett park.

Overnight stay in wilderness has always been highly exciting to me. It is so relaxing and blissful. The tranquility of the jungle, all around, gets me freed from worries of routine worldly affairs. The solitude of the calm atmosphere provides a unique opportunity of self-realisation and intimate moments with the soul. The long journey from Jaipur to Corbett, and then, day-long jungle visit on *kutchas* in the gypsy was certainly a bit tiring for my age. Therefore, the opportunity to relax in comfortable

some tiger/leopard in the vicinity. Once I spotted a tiger-like-striper, but later on, it was found to be a hyena. From distance in dim light, one may get confused between tiger and hyena, as both the animals have off-white to golden coat and black stripes all over, except the fact that unlike tiger, hyena's dog-like-face is black in colour and devoid of stripes. Though, it was not far from us but the growing darkness caused this confusion. It is because of this similarity of stripes that often, hyena is mistaken to be a tiger by frightened villagers. It gets killed, even though, it is almost harmless, rather, a friend of humans as it keeps the area clean by eating out carcasses of dead animals.

This programme, After all, the dealers had been invited primarily for this entertainment only. The wildlife reserves are important ecotourism sites. Therefore, tourism inside and around these must strictly be regulated to ensure complete serenity.

A huge fishing owl, perching on a *haldu* (Adina cordifolia) tree close to a rest house, suddenly made a loud hooting call, which echoed in the entire residential campus of Dhikala. It is then that the rest house *chowkidar* informed us about a film on Corbett reserve being screened in the open air theatre, in the Dhikala complex itself.

Heads, made of sticks of *Sacra munja* grass tufts, was highly rewarding. From our seats placed in the balcony of the legendary forest rest house of Dhikala, the Ramganga river, spread over a width of more than a kilometer, was displaying her charms. In the late hours of the evening, the entire place seemed to be wrapped in a blanket of mist and darkness. Thought it was an ideal time for leopard-like-crepuscular to embark on their hunting expedition but the magnetic attraction of the river kept drawing all the wild creatures, big or small, towards the water stream, irrespective of the fear of the carnivores. Typical brief alarm calls emitted by chinkara, barking deer and started echoing across through the silence of the quiet twilight hours. On every such call, using our binoculars, we were scanning the length and breadth of the river, in the hope of sighting

some tiger/leopard in the vicinity. Once I spotted a tiger-like-striper, but later on, it was found to be a hyena. From distance in dim light, one may get confused between tiger and hyena, as both the animals have off-white to golden coat and black stripes all over, except the fact that unlike tiger, hyena's dog-like-face is black in colour and devoid of stripes. Though, it was not far from us but the growing darkness caused this confusion. It is because of this similarity of stripes that often, hyena is mistaken to be a tiger by frightened villagers. It gets killed, even though, it is almost harmless, rather, a friend of humans as it keeps the area clean by eating out carcasses of dead animals.

This programme, After all, the dealers had been invited primarily for this entertainment only. The wildlife reserves are important ecotourism sites. Therefore, tourism inside and around these must strictly be regulated to ensure complete serenity.

Next day, riding the gypsy early morning, we resumed our jungle visit. This time we decided to move towards the northern side. It was freezing cold at this hour in last December. Though, we had warm clothes yet the chill was penetrating our bodies, piercing through the clothes. In the middle of the road, we found some pigs cuddled into one huge lump to evade cold. Surprisingly, the animals paid no heed to the closely approaching vehicle. They did not seem interested in leaving their comfort, inspite of the clear threat of being crushed. But the clever driver steered through with utmost care, lest they get hit. On our right side were few shrubs having orange-like fruits. The driver told us that there were edible and non-edible fruits. The tourists contributed to conservation efforts, by observing don'ts in the reserve. The low pitch of the film, coupled with the quietness maintained by the disciplined viewers, had heightened the thrill of our tour of this beautiful wild treasure, spread in the foothills of the Himalayas. I was much impressed by the eco-tourism culture developed in Corbett. It is worth replicating in several other reserves of India and abroad.

I recall once during the lean period of May, when the management of Tiger Den, a unit of Rajasthan Tourism Development Corporation at Sariska reserve, had booked its entire property for three consecutive days to a corporate house to host a three-day-meet for its dealers from all over North India. They had arranged DJs and dancers and had put powerful lights to illuminate the area. I had to face great difficulty in stopping

tourists are permitted by the management to use these hides, due to security concerns. An elephant ride also provides rare opportunity of contrasting interior of jungles without coming in close contact to the wildlife. It may be interesting to learn that in reserves like Corbett, though, a tiger may safely be tracked, followed and sighted from elephant back, but a tiger show like the reserves of Madhya Pradesh (MP) cannot be organized by circumventing a tiger with the help of three-four elephants. The mystery behind this is that in MP forests are devoid of wild elephants, therefore, tigers have not been able to test their power in duels against the elephants and are scared of the size of these giants. But in elephant countries, the tiger has decisively established its superiority over all the animals, including elephants, causing them to maintain respective distances.

After lunch, quickly, we headed back to the forest, where we had the tiger sighting this morning. Now, there were few more tourist gypsies. After an hour's tracking, suddenly, we could spot a fresh trail of pugmarks of three tigers. A close observation suggested movement of a mother with two young cubs. While we were busy tracking the trail, a gypsy, loaded with tourists, reached

run very professionally. They gave good food at reasonable cost. The complex had clean toilets as well. I always wonder as to why we do not develop such eco-friendly complexes at other reserves? Such basic amenities seem utmost essential when it is a jungle trip of three hours or more.

After lunch, quickly, we headed back to the forest, where we had the tiger sighting this morning. Now, there were few more tourist gypsies. After an hour's tracking, suddenly, we could spot a fresh trail of pugmarks of three tigers. A close observation suggested movement of a mother with two young cubs. While we were busy tracking the trail, a gypsy, loaded with tourists, reached

run very professionally. They gave good food at reasonable cost. The complex had clean toilets as well. I always wonder as to why we do not develop such eco-friendly complexes at other reserves? Such basic amenities seem utmost essential when it is a jungle trip of three hours or more.

After lunch, quickly, we headed back to the forest, where we had the tiger sighting this morning. Now, there were few more tourist gypsies. After an hour's tracking, suddenly, we could spot a fresh trail of pugmarks of three tigers. A close observation suggested movement of a mother with two young cubs. While we were busy tracking the trail, a gypsy, loaded with tourists, reached

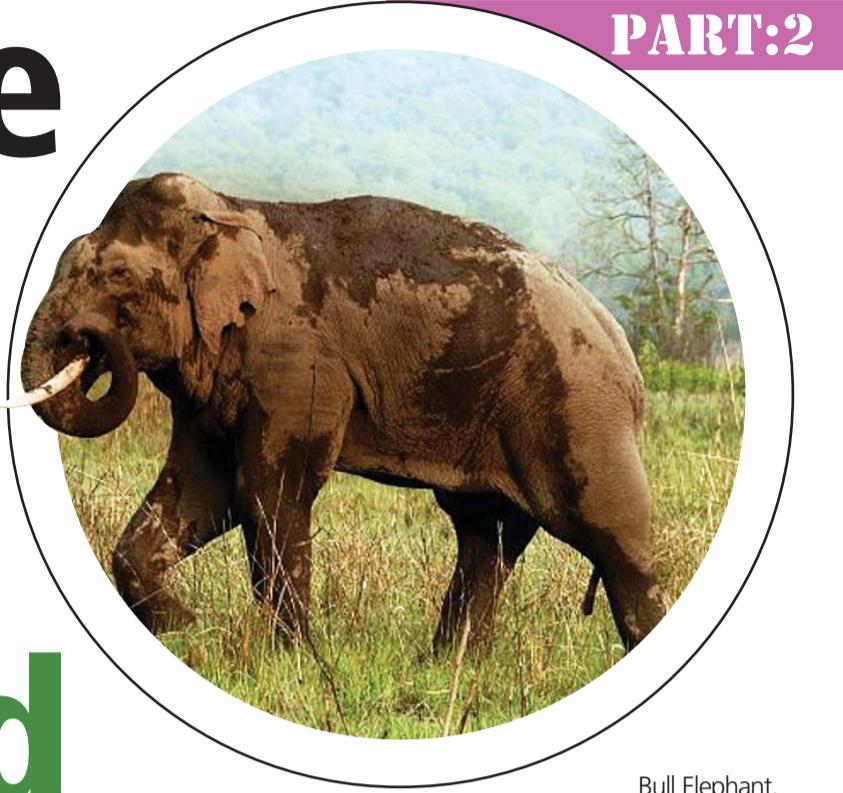
run very professionally. They gave good food at reasonable cost. The complex had clean toilets as well. I always wonder as to why we do not develop such eco-friendly complexes at other reserves? Such basic amenities seem utmost essential when it is a jungle trip of three hours or more.

After lunch, quickly, we headed back to the forest, where we had the tiger sighting this morning. Now, there were few more tourist gypsies. After an hour's tracking, suddenly, we could spot a fresh trail of pugmarks of three tigers. A close observation suggested movement of a mother with two young cubs. While we were busy tracking the trail, a gypsy, loaded with tourists, reached

run very professionally. They gave good food at reasonable cost. The complex had clean toilets as well. I always wonder as to why we do not develop such eco-friendly complexes at other reserves? Such basic amenities seem utmost essential when it is a jungle trip of three hours or more.

After lunch, quickly, we headed back to the forest, where we had the tiger sighting this morning. Now, there were few more tourist gypsies. After an hour's tracking, suddenly, we could spot a fresh trail of pugmarks of three tigers. A close observation suggested movement of a mother with two young cubs. While we were busy tracking the trail, a gypsy, loaded with tourists, reached

PART:2



Bull Elephant

area, used to support an excellent population of *swamp deer*, a rare species. Also, hog deer, had great preference for the low height grasses of this low-lying riverine area spread over around 99 square km. To the misfortune of these creatures, in the years 1961-74, a huge irrigation dam and residential colony for the workforce got constructed by the government at Kalagarh. Consequently, a huge chunk of their habitat got submerged. I also supported the conservationists, who fought tooth and nail against the government, to stop this scheme but to no avail.

Certainly, it was an irreparable loss to these species, but perhaps, the almighty nature had some other plans, not known to us, the mortals. Over a period of time, this Ramganga reservoir proved a great long-ranging ground for the long-migratory water birds, enhancing the value of the reserve many-fold.

On the third day while going back to Ram Nagar, in between Khammauli and Sarpulli, we were greeted by a train of beautiful *Kalij pheasants*. Though, Corbett possesses a good number of Kalij, but by nature, it is a shy bird. Certainly, we were extremely lucky that these glossy blackish-blue-grey birds, with white crest and inverted V-shaped tail, leisurely crossed our road, displaying their charms for our eyes to feast upon and our cameras to capture a lifelong memory.

The tourists, clad in multi-coloured dresses, were beaming with pleasure. They had sighted the Kalij, but by nature, it is a shy bird. Certainly, we were extremely lucky that these glossy blackish-blue-grey birds, with white crest and inverted V-shaped tail, leisurely crossed our road, displaying their charms for our eyes to feast upon and our cameras to capture a lifelong memory. This white-crested Kalij pheasant (*Lophura leucomelanos hamiltonii*) of Western Himalayas is one of the nine known sub-species.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

The study is authored by a team led by Dr. Trudy Voortman, PhD, Associate Professor in Nutritional Epidemiology at Erasmus University Medical Centre Rotterdam, with Dr. Carolina Ochoa-Rosales, PhD, Postdoctoral Scientist at the same institute, as primary author of the study.

#RESEARCH

Reduced Risk of Type-2 Diabetes

राष्ट्रदूत जयपुर, 8 नवम्बर, 2024

**बारिश से जख्मी सड़कें माँगे मरहम,
गहरे गड्ढे बन रहे हादसों की वजह**

पापलू म कृषक गाष्ठा का हुआ आयोजन

**जातारका जिला कलक्टर ने किया
मंचायत समिति का औचक निरीक्षण**

<p>वायताराज विभाग की ग्रामांग क्षेत्र में चलित योजनाओं में किसी प्रकार की आमी न रहे इसके लिए अतिरिक्त जिला लक्टर ओम प्रकाश सहारण ने वायत समिति कोटपूतली की ओचक रीक्षण किया तथा पंचायत समिति कोटपूतली में विभिन्न शाखाओं में पादित किये जा रहे कार्यों की नकारी ली तथा संबंधित रिकोर्ड की रच कर अतिरिक्त विकास अधिकारी पेंड्र आर्य को आवश्यक दिशा निर्देश दे गये।</p> <p>इस दौरान अतिरिक्त जिला लक्टर ओम प्रकाश सहारण ने परिस्थित रजिस्टर की जांच करने पर या कि कुल 40 कार्मिकों में से सिर्फ</p>	<p>कोटपूतला पायापत समिति के 27 अनुपस्थित कार्मिकों को थमाया कारण बताओ नोटिस अंधेर गर्दी की हदें पार 40 कार्मिकों में से सिर्फ 13 ही कार्मिक मिले उपस्थित</p>	<p>मन राम नाम भायम्ब इकबाल से बदलकर इकबाल खान रख लिया है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जावे पाठीय वाली की ढांचा, जगत्पुरा रोड, खेंग नागरियान</p> <p>मैंने अपना नाम शिखा भगवत्यानी से बदलकर प्रिया का लिया है अत भाविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाये पाठा-13-14, सिंधी कालोनी, दुर्गापुरा, जयपुर, राजस्थान-302018</p> <p>मैं विद्या प्रकाश जिसका राज्य पुलिस सेवा पुस्तिका में सहवन से विद्या प्रकाश जाट नाम अंकित है जिकर मेरे समस्त शैक्षणिक व अन्य दस्तावेजों में नाम विद्या प्रकाश अंकित है जिसका राजस्थान राज पत्र साधिकार प्रक्रियत 7 नवम्बर 2018 में करता दिया है भविष्य में मुझे विद्या प्रकाश नाम से ही जाना जाए</p> <p>मैं, जैसी- 700942 एच सुवेदार शिव कुमार ने जिला अदालत, जयपुर के समक्ष दिनांक 04.11.2024 के शायदपत्र के माध्यम से अपनी पत्नी का नाम ममता कुमारी (Mamta Kumari) से बदलकर ममता कुमारी (Mamta Kumari) निवासी मिलिट्री हास्पिटल जयपुर कर लिया है।</p>	<p>आज दिनांक 24.10.2024 को मेरे हस्ताक्षर तथा कालांतरी मोहर के अंधेन जारी किया गया। आइदा तारीख पेशी 27.12.2024</p> <p>सहायक आयुक्त (प्रधम) देवस्थान विभाग, जयपुर</p>
<p>न्यायालय प्रधान न्यायाली मोहद्देह, कुम्हन न्यायालय इंदौर 217, उत्तराखण्ड, इंदौर (मप्र.) हिन्दू विवाह प्र.क्र. 159/2024, पेशी दिनांक 10.12.2024 अमन पिता श्री राम वन व्यास प्रार्थी उम 28 वर्ष, घासा- पांडेश्वर, निवासी- 253, बदलती नगर, इंदौर विवाह-न्द</p> <ol style="list-style-type: none"> श्रीमती सोनिया परिण अमन वन व्यास.. प्रतिप्रार्थी तीर्त्तमान परी वाराणी शरवत <p>अ-28 वर्ष, घासा- पांडेश्वर, नगर- 52, गाँवी नं. 1, इंदौर नगर, इंदौर अ-28 वर्ष, घासा- पांडेश्वर, नगर- 52, गाँवी नं. 1, इंदौर नगर, इंदौर</p> <ol style="list-style-type: none"> भावेश वाराणी <p>अ-30 वर्ष, घासा- वाराणी, पाठा- ग्राम तीर्त्तमान वर्ग, तह- सुनोदूर, विलास पांडी व्यास</p> <ol style="list-style-type: none"> श्रीमती सोनिया परिण अमन वन व्यास.. प्रतिप्रार्थी तीर्त्तमान परी वाराणी शरवत <p>पा-28 वर्ष, घासा- वाराणी शरवत, पाठा- 52, गाँवी नं. 1, इंदौर नगर, इंदौर अ-28 वर्ष, घासा- वाराणी शरवत, पाठा- 52, गाँवी नं. 1, इंदौर नगर, इंदौर</p> <ol style="list-style-type: none"> भावेश वाराणी <p>अ-30 वर्ष, घासा- वाराणी, पाठा- ग्राम तीर्त्तमान वर्ग, तह- सुनोदूर, विलास पांडी व्यास</p> <ol style="list-style-type: none"> श्रीमती सोनिया परिण अमन वन व्यास.. प्रतिप्रार्थी तीर्त्तमान परी वाराणी शरवत <p>पा-28 वर्ष, घासा- वाराणी शरवत, पाठा- 52, गाँवी नं. 1, इंदौर नगर, इंदौर अ-28 वर्ष, घासा- वाराणी शरवत, पाठा- 52, गाँवी नं. 1, इंदौर नगर, इंदौर</p> <ol style="list-style-type: none"> भावेश वाराणी <p>अ-30 वर्ष, घासा- वाराणी, पाठा- ग्राम तीर्त्तमान वर्ग, तह- सुनोदूर, विलास पांडी इस प्रक्रियत का प्रार्थी अमन पिता श्री राम वन व्यास ने आपके</p>			

र्मिक अनुपस्थित रहे सभी नुपस्थित 27 कार्मिकों को कारण ताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके साथ ही उन्होंने अतिरिक्त कास अधिकारी को निर्देशित किया

हेतु बैठक आयोजित
का स्ट्रीट चिल्डन के पुनर्वास हेतु
प्रयत्न जल्दी समिति और दी

आपात सूचना	
<p>सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2024-25 में स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) के समस्त बार्डों को ODF+ घोषित किया जा रहा है यदि उक्त संबंध में किसी व्यक्ति या संस्था को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन की अन्दर 07 दिवस की समयावधि में नगरपालिका किशनगढ़बास कार्यालय में लिखित रूप में प्रस्तुत करें बाद में मियाद आपत्ति मान्य नहीं होगी। सूचित रहे।</p> <p style="text-align: right;">अधिशासी अधिकारी नगरपालिका किशनगढ़बास</p>	 एड टाप एड वायरो आफ लाइन-3 11 नियवासपुरा-पदमपुरा यार्ड ऑफ जयपुर डिलीजन। अनुमानित यात्रा (रु): 4,15,22,58,77 बिट्टि सिक्युरिटि राशि (रु): 3,57,600.00 निविदा खोलने की तिथि: 03.12.2024 नोट: ₹-निविदा की अंतिम तिथि एवं समय: निविदा खोलने की तिथि को 15:00 बजे तक इ-निविदा खोलने की तिथि एवं समय: निविदा खोलने की तिथि को 15:00 बजे बाद सम्पूर्ण जानकारी के सिये बेसाइट का पता: http://www.ireps.gov.in 1285-AJ/24

[View Details](#) [Edit](#) [Delete](#)

